ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 36-37
ISSN NO.-2347-2944
Vol-12, Issues-XII YEAR 2018 Extra

'' एकात्म मानववाद और आर्थिक विकास के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक भारत ''

शशिबाला

असि0 प्रोफे0, अर्थशास्त्र विभाग म0ग0 काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ0प्र0) भारत

Received- 12 .05. 2018, Revised- 16 .05. 2018, Accepted - 20.05.2018 E-mail: drshashibala9@gmail.com

सारांश : *स्वतंत्रता प्राप्ति के सत्रह वर्ष ऐसे ही गुजर जाने के बाद एकात्म मानववाद के प्रणेता पं0 दीनदयाल उपाध्याय के मन में छटपटाहट होने लगी , एक सुनिश्चित विकास न देख उन्होंने अपने मन की बात लोगों के सामने रखी । एकात्म मानववाद के नाम से 1961–62 में समुचित , सामुहिक विकास की एक रूपरेखा देश के पास रखी । उन्होंने वर्तमान परिस्थिति के कारण भी बताए कि अभी के बिखराव के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले की लापरवाही एवं दूरगामी सोच की कमी को दोषी ठहराया जो अक्षरशः सत्य हैं ।*

कुंजी शब्द – मानववाद, प्रणेता, छटपटाहट, सामुहिक विकास, रूपरेखा, बिखराव, लापरवाही, दूरगामी सोच।

पंडित जी के दृष्टिकोण से उन दिनों कुछ नेताओं द्वारा, जिनमें महात्मा गांधी एवं लोकमान्य तिलक भी शामिल थे। इनके द्वारा सुझाए गये बात पर ध्यान दिया जाता तो आज जिस तरह से हमारे स भ्यता संस्कृति का हास हो रहा है। सर्वहारा वर्ग को संबल नहीं मिल पा रहा उनकी दशा जस की तस बनी हुई न होती । अमीर और अमीर न बनकर देश के सभी लोगों का यथोचित विकास होता । पंडित जी के एकात्म मानववाद का अर्थ ही यही था कि व्यक्ति ,व्यक्ति में भेद न किया जाए और उन लोगों के विकास में ध्यान केन्द्रित किया जाए । जिन्होंने परतंत्रता के समय गुलामों की जिन्दगी बसर की है और इसके लिए व्यक्ति को महत्व दिया जाए या न फो न शी ने दिया जाए ,साय ने बनाया जाए पंडित दीन दयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद इस बात को समग्र विकास की आत्मा माना जैसे आवश्यकता के अनुसार अविष्कार न हो कि आविष्कार को आयश्यकता मान कर उपभोगवाद को बढ़ावा दिया जाए ऐसा होने पर पूजीवाद को बढ़ावा मिलेगा और वही हो गया । जनकल्याण के स्थान पर व्यक्तिगत कल्याण उपयोग होने लगा जो एकात्म मानववाद के विपरीत है । विकास को हम किसी रूप में देखें यह मुख्य बात होनी चाहिए पर यहां पर हमसे चूक हुई । इस पर पंडित जी का मानना है कि स्वाभिमान की रक्षा करके ही हम अपनी सभ्यता, संस्कृति, आदर्श, नैतिकता की रक्षा कर सकते हैं अन्यथा हमारा मनोभाव तो इसके विपरीत होगा ।

एकात्म मानववाद का उद्देश्य समग्र मानव जाति का कल्याण है । यह सिद्धान्त यह बताता है कि अर्थ , धर्म और राजनीति एक दूसरे के पूरक है एक के बिना दूसरा अधूरा ही नहीं खतरनाक भी हो सकता है । जिस प्रकार अर्थविहीन व्यक्ति धर्म की रक्षा नहीं कर सकता, चोरी, डकैती आदि पाप कर्म करने लगता है उसी प्रकार धर्म विहीन राजनीति पथ भ्रष्ट होगी इसमें दो राय नहीं क्योंकि उसे पाप पुण्य का भय नहीं होगा । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सत्तासीन नेताओं द्वारा भारतीय सभ्यता और संस्कृति की रक्षा न कर पाना उनकी सबसे बड़ी भूल थी । परन्तु भारतीय संस्कृति की जड़े इतनी गहरी हैं कि वह पीढ़ी दर पीढ़ी आज भी कायम हैं जिसके दम पर भारत आज भी विश्वगुरू बनने के मार्ग पर अग्रसर है । विविधता में एकता अथवा एकता का विविध रूपों में व्यक्तिकरण ही भारतीय संस्कृति का केन्द्रस्थ विचार है । पं0 दीनदयाल के एकात्म मानव दर्शन में व्यक्ति से समष्टि तक सब में गुंथित है । व्यक्ति का विकास हो तो समाज विकसित हो न में व्यक्ति से समष्टि तक सब एक ही सूत्र का विकास हो तो समाज विकसित होगा, समाज विकसित ती राष्ट्र की उन्नति होगी राष्ट के उन्नति से विश्व का कल्याण होगा । ३१ ज की मूल धारणा अस्तित्व के लिए संघर्ष नहीं बल्कि अस्तित्व के लिए सहयोग है ।

आज सम्पूर्ण जगत में चेतना का आविष्कार है, दार्शनिक भी मूलतः । वैज्ञानिक है । पश्चिम के दार्शनिक द्वैत तक पहुँचे । हीगेल ने थोसिस, एण्टीथीसिस तथा सिन्थेसिस का सिद्धान्त रखा, जिसका आधार लेकर कार्लमार्क्स ने अपना इतिहास और अर्थशास्त्र का विश्लेषण प्रस्तुत किया । डार्विन ने मात्स्यन्याय (Survival of the fiftest) को ही जीवन का आधार माना। किन्तु हमने सम्पूर्ण जीवन में मूलभूत एकता का दर्शन किया, जो द्वैतवादी रहे उन्होंने भी प्रकृति और पुरूष को एक दूसरे का विरोध अथवा परस्पर संघर्षशील न मानकर पूरक ही माना है। जीवन की विविधता अन्तर्भूत एकता का आविष्कार है और इसलिए उसमें परस्परानुकूलता तथा परस्पर पूरकता है। वि.ति का द्योतक जिरा मात्स्यन्याय या जीवन संघर्ष को पश्चिम के लोगों ने ढूंढ़ निकाला, उसका ज्ञान हमारे दार्शनिकों को पहले से था, मानव – जीवन में काम, क्रोध आदि षविकारों को भी हमने स्वीकार किया है, किन्तु

अनुरूपी लेखक

इन सब प्रवृत्तियों को अपनी संस्कृति अथवा शिष्ट व्यवहार का आधार नहीं बनाया ।

एकात्म मानववाद (Integral humanism) के प्रणेता पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी एक दार्शनिक , समाजशास्त्री , अर्थशास्त्री एवं राजनीतिज्ञ थे। इनके सिद्धान्त का उद्देश्य एक ऐसा स्वदेशी सामाजिक आर्थिक मॉडल प्रस्तुत करना था जिसमें विकास के केन्द्र में मानव हो।

प0 उपाय माघभी पूजीवादी व्यक्तिवाद एवं मार्क्सवादी दोनों का विरोध किया लेकिन आधुनिक तकनीक एवं पश्चिमी विज्ञान का स्वागत '' नकि एवं पश्चिमी विज्ञान का स्वागत किया । ये पूजीवाद और समाजवाद के मध्य एक ऐसी राह के पक्षधर थे जिसमें दोनों प्रणालियों के गुण तो मौजूद हो लेकिन उनके अतिरेक एवं अलगाव जैसे अवगुण न हो । पूँजीवादी एवं समाजवादी विचार धाराएं केवल मानव के शरीर एवं मन की आवश्य कताओं पर विचार करती है इसलिए वे भौतिक वादी उद्देश्य पर आधारित है , जबकि मानव के सम्पूर्ण विकास के लिए इनके साथ – साथ आत्मिक विकास भी आवश्यक है। साथ ही, उन्होंने एक वर्गहीन, जातिहीन और संघर्षमुक्त सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की थी । एकात्म मानववाद ही ऐसा दर्शन है जो अपनी प्रकृति में एकीकृत एवं संधारणीय (Integral and Sustaimble) है। विश्वभर में विकास के कई मॉल लाए गए लेकिन आशानुरूप परिणाम नहीं मिला। आज भी विश्व की एक बड़ी आबादी गरीबी में जीवन–यापन कर रही है। अतः विश्व को एक ऐसे ही विकास मॉडल की तलाश–एकात्म मानववाद का उद्देश्य व्यक्ति एवं समाज की आवश्यकता को संतुलित करते हुए प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन सुनिश्चित करना है । यह प्राकृतिक संसाधनों के संधारणीयउपभोग का समर्थन करता है जिससे कि उन संसाधनों की पुनः पूर्ति की जा सके। एकात्म मानववाद न केवल राजनीतिक बल्कि आर्थिक एवं सामाजिक लोकतंत्र एवं स्वतंत्रता को भी बढ़ाता है। यह सिद्धान्त विविधता को प्रोत्साहन देता है। अतः भारत जैसे विविधतापूर्ण देश के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त है। इस प्रकार एकात्म मानववाद का उद्देश्य प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करना है एवं अंत्योदय अर्थात समाज के निचले स्तर पर स्थित व्यक्ति के जीवन में सुधार करना है। पूंजीवादी व्यवस्था के साथ शोषण और केन्द्रीकरण के साधन के रूप में, प्रजातंत्र में व्यक्ति का विकास हुआ, शोषण मिटाने के लिए समाजवाद लाया गया, परन्तु उसने व्यक्ति की। स्वतंत्रता और गरिमा को ही नष्ट कर दिया, आज विश्व किंकर्तव्यविमूढ़ है उसे मार्ग नहीं दिख रहा है कि वह कहाँ जाए पश्चिमी देश आज स्वयं मार्ग टटोल रहे है । इस विषम परिस्थिति में पूरे विश्व की दृष्टि भारतीय संस्कृति की ओर ही जाती है, शायद इस समस्या का समाधान भारतीय संस्कृति में निहित हो ।

इस प्रकार एकात्म मानववाद दर्शन भारत जैसे कल्याणकारी एवं समृद्ध राष्ट्र में सदैव प्रासंगिक रहेगा और पूरे विश्व के लिए कल्याणकारी मार्ग प्रशस्त करेगा ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. 2 - Rober Lekachman " A History of Economic Ideas" P. 4.
2. L. H. Haney History of Economic Thought] P. 4-5.
3. H - Cole Socialist Thought, P. 11-14 thought based on Scientific Socialism Karlmarks & Communism.
4. Mishra S- K- (2017): Deen Dayal Upadhyay :Thoughts Revisited in Contemporary India (New Delhi:Kunal Books) P- 35-36.
5. "The Pioneer", news paper :Varanasi, August 18, 1988.
6. 'Drishti' A: DeendayalUpadhyay.Drishtiias Com.hindi.
7. https://hi.m.wikipedia.Org.wiki.hindi.
8. https:// m.jagran.Com.utta-pradesh.m. hindi.

*****